Review of ReseaRch
ISSN: 2249-894X
Impact Factor : 5.7631(UIF)
Volume - 14 | Issue - 7 | aPRIL - 2025

शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में शैक्षणिक संस्थानों का योगदान

प्रो. मृत्युंजय अगडी
संगीत विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़.

स्वतंत्रता के बाद सांस्कृतिक विकास के प्रति एक प्रकार की जागरूकता आई। जैसे-जैसे आम लोगों में सांस्कृतिक चेतना गहरी हुई. भारत सरकार ने महसूस किया कि स्कूली स्तर पर भारतीय कला और संस्कृति के विकास के लिए प्रयास करना उसकी प्रत्यक्ष जिम्मेदारी है। उस समय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय बी.जी. खेर सांस्कृतिक उत्थान के प्रति बहुत उत्सुक थे। 1948-49 में संगीत की स्थिति देखकर उन्होंने 'संगीत-शिक्षा-समिति' की स्थापना की। इसके अध्यक्ष श्री बी.जी. जत्वार था। इसी कारण इस समिति को जत्वार-समिति' के नाम से भी जाना जाता है। इस समिति का कार्य उस समय की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का सर्वेक्षण करना और उसके अनुसार संगीत शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर सिफारिशें करना था. जो इस प्रकार थीं-

1. शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर संगीत का स्थान।
2. स्कूलों के विभिन्न स्तरों पर संगीत शिक्षकों की योग्यता के बारे में जानकारी।
3. सहायता अनुदान का प्रावधान।
4. विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के पाठ्यक्रम की जानकारी।
5. पी.एस.सी और एस.एस.सी. परीक्षाओं का पाठ्यक्रम, और
6. भारतीय संगीत में एकरूपता लाने के लिए एक समान अंकन प्रणाली का प्रयास।

भारत सरकार ने शिक्षा में ललित कलाओं के महत्व को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया और पाठ्यक्रम में ललित कलाओं को शामिल करने पर गंभीरता से विचार करना शुरू कर दिया। फलस्वरूप 1952-53 में, जब भारत के वर्तमान शैक्षिक पहलुओं का अध्ययन करने के लिए 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' (मुदलियार आयोग) की नियुक्ति की गई, तो आयोग ने अपनी सर्वेक्षण सिफारिशों में अन्य विषयों के साथ-साथ संगीत के विषय को भी शामिल किया। इसे माध्यमिक विद्यालयों में शामिल करने का भी सुझाव दिया गया है-

"In the past our schools have left whole areas of the pupils personality untouched and unquickened their emotional life, their social impulses their constructive talents, their artistic tastes..... It is in view of these serious shortcomings in our educational programmes that we have recommended... that a place of honour should be given to subjects like art, craft, music, dancing & the development of hobbies."

संगीत की सामान्य शिक्षा का उद्देश्य

संगीत में बहुमुखी न्यूनतम शिक्षा आसानी से प्राप्त करना है ताकि छात्र संगीत के मूल सिद्धांतों से परिचित हो सके और अपनी संगीत प्रतिभा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके। विद्यालयों में आने वाले विद्यार्थियों की क्षमता का आकलन कर यदि उनमें क्षमता है तो संगीत के प्रति उनका रूझान विकसित करने के लिए विशेष प्रयास किये जाने चाहिए। उनके व्यक्तित्व विकास के लिए उन्हें बचपन से ही संगीत और नृत्य का महत्व समझाया जाना चाहिए।

1845 में अंग्रेजी 'काउंसिल ऑफ एजुकेशन' ने कोलकाता में एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन किसी कारण से कंपनी के निदेशक इस पर सहमत नहीं हुए। 1857 में कोलकाता, मद्रास और मुंबई में विश्वविद्यालयों की स्थापना के लिए कानून बनाए गए और विश्वविद्यालयों का कार्य केवल परीक्षाएँ आयोजित करना माना गया। 1882 में पंजाब विश्वविद्यालय, 1916 में मैसूर विश्वविद्यालय, 1917 में पटना विश्वविद्यालय, 1917 में बनारस विश्वविद्यालय, 1918 में उस्मानिया विश्वविद्यालय और 1921 में लखनऊ में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। 14 आदर्श विश्वविद्यालयों को शिक्षण एवं कार्यशील विश्वविद्यालय कहा जा सकता है।

हालाँकि, 12 में से केवल 5 विश्वविद्यालयों में शिक्षण की व्यवस्था थी, जबकि बाकी सभी परीक्षाएँ आयोजित करने और कॉलेजों को सुचारू रूप से चलाने से चिंतित थे।1924 में शिमला में सभी विश्वविद्यालयों के कार्यकर्ताओं की एक बैठक हुई और 'अंतर-विश्वविद्यालय परिषद' की स्थापना की गई। इसके बाद दिल्ली, नागपुर, आंध्र, आगरा, चिदम्बरम आदि में विश्वविद्यालय स्थापित किये गये तथा मद्रास, मुम्बई, इलाहाबाद. कोलकाता. पंजाब आदि में विश्वविद्यालयों की व्यवस्था में सुधार किये गये।

विद्यालयों में संगीत शिक्षण से संबंधित समस्याएँ एवं समाधान

विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता, यह प्रतियोगिताओं या अन्य आयोजनों तक ही सीमित है। बच्चों को रागों पर आधारित समूह गान सिखाना जरूरी है, जिसमें शब्दों की जटिलता न हो बल्कि रागों का स्वभाव ध्वनि के रूप में ही उनके गले में कैद हो। फिर उस धुन के सरल स्वर समूहों के बारे में भी जागरूक किया जाना चाहिए।

आज स्कूलों में संगीत को एक विषय के रूप में तो रखा जाता है लेकिन संगीत के नाम पर झंडा गीत, भजन, प्रार्थना, राष्ट्रगान आदि पढ़ाया जाता है। स्वर, ताल आदि का प्रारम्भिक ज्ञान नहीं कराया जाता। जैसे बच्चों को हर विषय का बुनियादी ज्ञान स्कूल से मिलता है, संगीत में वैसा नहीं है। कुछ सरकारी स्कूलों में कक्षा 10 और 12 में शास्त्रीय संगीत पढ़ाया जाता है और कुछ मान्यता प्राप्त पब्लिक स्कूलों में शास्त्रीय संगीत सिखाने का अवसर मिलता है, लेकिन माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक स्तर के सामान्य स्कूलों में यह प्रवृत्ति देखने को नहीं मिलती है। इस कारण जब ये छात्र विश्वविद्यालय में शास्त्रीय संगीत को एक संपूर्ण विषय के रूप में अपनाते हैं, तो उनके ज्ञान के निम्न स्तर के कारण, उन्हें निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा करने

में कठिनाई होती है और विश्वविद्यालय अधूरे ज्ञान के साथ उत्तीर्ण होता है। इसके अलावा, स्कूलों में वाद्य संगीत के अवसरों की कमी के कारण विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में खातक स्तर पर वाद्य संगीत में छात्रों की संख्या बहुत कम है। कुछ छात्रों को वाद्य संगीत की कक्षाओं में यह कहकर प्रवेश दिया जाता है कि उनकी आवाज़ अच्छी नहीं है, इसलिए उन्हें वाद्य संगीत सीखने की ज़रूरत है।

संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए संगीत शिक्षा मुख्य रूप से प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के स्कूलों में पढ़ाई जानी चाहिए। देशभक्ति गीतों और प्रार्थनाओं के अलावा स्वर ताल, लय और राग आदि का ज्ञान भी शास्त्रीय संगीत पाठ्यक्रम में शुरू से ही शामिल किया जाना चाहिए। छात्रों को प्रार्थना सभा में कुछ समय अपनी संगीत प्रस्तुति के लिए देना चाहिए, जिससे न केवल उस विशेष छात्र को प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि अन्य छात्रों की भी शास्त्रीय संगीत में रुचि बढ़ेगी। इसके अलावा वाद्य संगीत की शिक्षा का भी प्रावधान किया जाना चाहिए।

सभी विषयों का अध्ययन और अध्यापन विद्यालय स्तर पर किया जाता है और यह केवल एक संगीत संस्थान नहीं है, इसलिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. इसके तहत संगीत विषय लेने का मौका मिलता है। जब वैकल्पिक विषयों की बात आती है, तो कुछ बच्चे संगीत चुनते हैं। यह पहला कदम है जब किसी छात्र को शास्त्रीय संगीत को ठीक से समझने का मौका मिलता है। लेकिन उनमें से कुछ अधिक अंक पाने के लिए संगीत का सहारा लेते हैं।

स्कूलों में संगीत के स्तर को बढ़ाने के लिए समय-समय पर संगीत से संबंधित सेमिनार आयोजित किए जाने चाहिए, छात्रों को शास्त्रीय संगीत कार्यक्रमों में ले जाया जाना चाहिए और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में एसपीआईसी मैके द्वारा लैक डैम का भी आयोजन किया जाना चाहिए।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद ने संगीत को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास किया है, 'सुप्रभात' सुबह की राग श्रृंखला को बढ़ावा देने के लिए एक अच्छा कदम उठाया गया है। इसके अलावा, दोपहर, शाम और रात के राग कार्यक्रम भी आयोजित किए जाने चाहिए और छात्रों को उनमें भाग लेना चाहिए। संगीत का शिखर पूर्णता आध्यात्मिकता के विलय में निहित है। समय, मौसम, बातावरण या परिस्थिति कोई भी हो. उद्देश्य के प्रति निष्क्रियता होती है। बाहीरी दिखावा मन पर हावी हो जाता है। लेकिन यदि शिक्षक संगीत के प्रति समर्पण भाव से कार्य करें तो आध्यात्मिकता का भाव आ सकता है।

जुलाई 1983 में 'संगीत' में प्रकाशित संतूर वादक श्री ओमप्रकाश चौरसिया के साक्षात्कार से ज्ञात होता है कि यूरोपीय देशों में न केवल भारतीय वाद्य संगीत बल्कि गायन के प्रति भी रुचि बढ़ रही है। वहाँ द्रुपद गायन शैली को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। पं. रविशंकर ने मुंबई में किन्नर विद्यालय की स्थापना की, जिसकी एक शाखा लॉस एंजिल्स में भी खोली गई।

1955 में उ. अलाउद्दीन खान साहब के पुत्र उ. अली अकबर खान (सरोद वादक) ने कोलकाता में 'अली अकबर कॉलेज ऑफ़ म्यूज़िक' की स्थापना की। दिसंबर 1967 में अमेरिकी जनता की इच्छा पर उस्ताद अली अकबर खान ने वहां 'अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक' की भी स्थापना की। कॉलेज तेजी से लोकप्रिय हो गया और कई छात्रों ने वहां भारतीय संगीत की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की और प्राप्त कर रहे हैं।

1954 में ए अली अकबर खान ने येहुदी मेनुहिन के साथ मिलकर 'फोर्ड-फाउंडेशन' प्रोजेक्ट के तहत पहली बार न्यूयॉर्क, वाशिंगटन, लंदन में एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया और प्रसिद्ध गिटारवादक जुबियन ब्रीन के साथ कुछ रचनाएँ भी कीं। यह अमेरिका में टीवी है। शो देने वाले पहले भारतीय कलाकार। 1964 ई. से 1967 ई. तक वे अमेरिकन सोसाइटी के संगीत विभाग का संचालन करते रहे। हमारे महान संगीतकारों के इस प्रयास से विदेशी संगीत संस्थाओं के प्रयास भी सुचारु रूप से चल रहे हैं।

1944 में, मिशिगन विश्वविद्यालय ने संगीत चिकित्सा में पहला पाठ्यक्रम तैयार किया। इस पाठ्यक्रम के अनुसार लोगों को शिक्षा दी जाने लगी। यह कोर्स सबसे पहले 1946 में कैन्सास यूनिवर्सिटी में शुरू किया गया था। जल्द ही अन्य कॉलेजों ने भी इसे अपना लिया। 1950 में, नेशनल एसोसिएशन फॉर म्यूजिक थेरेपी के नाम से इस संस्था की स्थापना की गई है। इस संस्थान द्वारा संगीत चिकित्सा प्रमाण पत्र एवं पंजीकरण आदि प्रारम्भ किये गये। ऐसे में जून 1964 में अमेरिका में संगीत चिकित्सकों की एक बैठक में उपस्थित शिक्षकों से अपने-अपने क्षेत्र में संगीत चिकित्सा के प्रयोग करने और विवरण देने का अनुरोध किया गया। 1962 में बर्लिन में भी कुछ मानसिक रोगियों पर संगीत का लाभकारी प्रभाव देखा गया। 25, 26, 27 अप्रैल 1987 को 'महर्षि गंधर्व वेद विश्वविद्यापीठ' में संगीत चिकित्सा विषय पर एक अखिल भारतीय संकल्पना सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसमें भारत के 83 शीर्ष विद्वानों ने भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किये। विद्वानों का मत है कि यदि किसी व्यक्ति का दिल धड़कना बंद कर दे तो भी संगीत के माध्यम से इसका इलाज किया जा सकता है। जैसे-जैसे विभिन्न संस्थाओं द्वारा किये गये ऐसे प्रयोग और अखबारों में संबंधित लेख जनता तक पहुँचते हैं, लोग शास्त्रीय संगीत के महत्व से परिचित होते हैं।

संदर्भ

1. संगीत, जून 1988 (संस्थागत शिक्षण में संगीत का विकास, श्रीमती वी. प्रेमकुमार दासु)

2. On the basis of Indian Educational Documents Since Independence: Edited by Arabina Biswas & Suren Aggarwal

3. उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षण पद्धति में संगीत का योगदान, (लघु शोध प्रबंध), हुदेश कुमार, 1997

4. शास्त्रीय संगीत शिक्षा समस्याएँ एवं समाधान, डॉ. अलकनंदा पननीटकर से उद्धृ त संगीच शिक्षण समस्याएँ तथा निराकरण, डॉ. स्वतंत्र शर्मा

5. संगीत की संस्थागत शिक्षण-प्रणानी, अमरेशचन्द्र चौबे

6. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे

7. संगीत की संस्थागत शिक्षण-प्रणाली, अमरेशचन्द्र चौबे

8. आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, डॉ. हुकमचंद

9. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, अनीता गौतम